ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरणीय चेतना भारतीय संस्कृति की जीवन-दृष्टि का आधार : प्रो. रमाकान्त पाण्डेय

संस्कृत दिवस पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में हुआ विशिष्ट व्याख्यान

वर्धा, 31 अगस्त 2026: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के संस्कृत साहित्य विभाग द्वारा संस्कृत दिवस के पावन अवसर पर "संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरणीय चेतना" विषय पर 28 अगस्त को महादेवी वर्मा सभागार में विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमाकान्त पाण्डेय ने

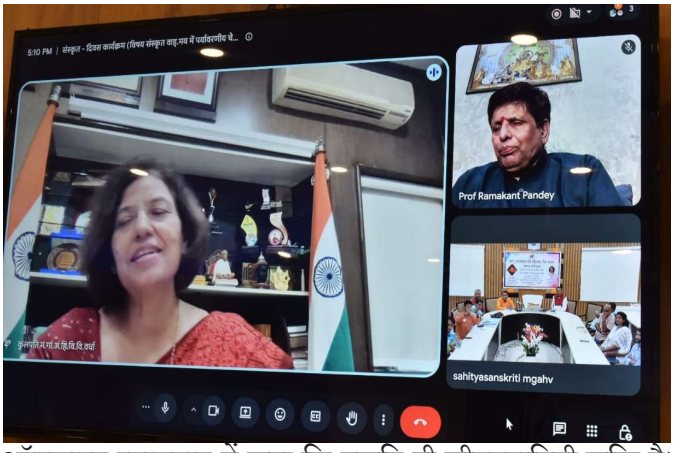

ऑनलाइन व्याख्यान में कहा कि प्रकृति ही जीवनदायिनी शक्ति है। प्रकृति के साथ समन्वय स्थापित करके ही मानव जीवन में समृद्धि और संतुलन प्राप्त किया जा सकता है। संस्कृत शास्त्रों में प्रकृति को माँ के रूप में परिभाषित किया गया है। उन्होंने कहा कि सृष्टि के प्रारम्भ में जल की उत्पत्ति का उल्लेख भारतीय वाङ्मय में मिलता है। पृथ्वी के प्रति वेदों की मातृभावना को व्यक्त करते हुए उन्होंने वेद वाक्य "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि प्रकृति से ही जीवन का आरम्भ होता है और मानव सहित समस्त जीव-जगत का अस्तित्व प्रकृति पर निर्भर है। अतः पर्यावरण संरक्षण भारतीय संस्कृति में कोई नवीन विचार नहीं, बल्कि हमारी प्राचीन जीवन-दृष्टि का अभिन्न अंग है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा को कम्प्यूटर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त एवं वैज्ञानिक भाषाओं में माना जाता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के वर्तमान युग में संस्कृत भाषा के अध्ययन, अनुसंधान और प्रयोग की अपार सम्भावनाएँ हैं। उन्होंने कहा कि संस्कृत की महिमा का गान हिंदी के महान कवि मैथिलीशरण गुप्त सहित अनेक विद्वानों एवं विचारकों ने किया है। वर्तमान समय में संस्कृत को नवीन प्रौद्योगिकी और ज्ञान-विज्ञान से जोड़कर इसके व्यापक प्रसार को बढावा देने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप -दीपन एवं माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण के साथ हुआ। शोधार्थी साहेबुदेव शर्मा ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अवधेश कुमार ने अतिथियों का स्वागत करते हुए विषय-प्रवर्तन किया। संस्कृत साहित्य विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. प्रदीप ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन संस्कृत साहित्य विभाग के प्रभारी एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. जगदीश नारायण तिवारी ने किया।

इस अवसर पर डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. वीरेन्द्र प्रताप यादव, डॉ. जयन्त उपाध्याय, डॉ. शैलेष मरजी कदम, डॉ.श्रीनिकेत मिश्र, डॉ. अखिलेश यादव, डॉ. अभिषेक सिंह, बी.एस. मिरगे सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in **वेबसाइट/Website:** www.hindivishwa.org

दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305

कार्यक्रम में संस्कृत भाषा, भारतीय ज्ञान-परम्परा तथा पर्यावरण संरक्षण के अंतर्सम्बन्धों पर सार्थक विमर्श हुआ। उपस्थित विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों ने संस्कृत वाङ्मय में निहित पर्यावरणीय दृष्टि को वर्तमान वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक बताया।

संस्कृत वाङ्मयातील पर्यावरणीय चेतना भारतीय संस्कृतीच्या जीवनदृष्टीचा आधार : प्रो. रमाकांत पांडेय

संस्कृत दिनानिमित्त हिंदी विश्वविद्यालयात व्याख्यान

वर्धा, 31 ऑगस्ट 2026 : महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयातील संस्कृत साहित्य विभागाच्या वतीने संस्कृत दिनानिमित्त 'संस्कृत वाङ्मयातील पर्यावरणीय चेतना' या विषयावर 28 ऑगस्ट रोजी महादेवी वर्मा सभागृहात विशेष व्याख्यानाचे आयोजन करण्यात आले. कार्यक्रमाचे मुख्य वक्ते म्हणून उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालयाचे कुलगुरू प्रो. रमाकांत पांडेय ऑनलाइन व्याख्यानात म्हणाले की निसर्ग ही जीवनदायिनी शक्ती आहे. निसर्गाशी समन्वय साधूनच मानवी जीवनात समृद्धी आणि संतुलन प्राप्त होऊ शकते. सृष्टीच्या प्रारंभी जलाची निर्मिती झाल्याचा उल्लेख भारतीय वाङ्मयात आढळतो. पृथ्वीविषयी वेदांमध्ये व्यक्त करण्यात आलेल्या मातृभावनेचा उल्लेख करताना त्यांनी 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' या वेदवाक्याचा दाखला दिला. निसर्गापासूनच जीवनाचा प्रारंभ होतो आणि मानवासह संपूर्ण जीवसृष्टीचे अस्तित्व निसर्गावर अवलंबून आहे. त्यामुळे पर्यावरण संवर्धन हा भारतीय संस्कृतीतील कोणताही नवीन विचार नसून, तो आपल्या प्राचीन जीवनदृष्टीचा अविभाज्य भाग आहे, असे त्यांनी स्पष्ट केले.

कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी विश्वविद्यालयाच्या कुलगुरू प्रो. कुमुद शर्मा होत्या. अध्यक्षीय मनोगतात त्यांनी सांगितले की, संस्कृत भाषा संगणकासाठी सर्वाधिक उपयुक्त आणि वैज्ञानिक भाषांपैकी एक मानली जाते. कृत्रिम बुद्धिमत्तेच्या (AI) वर्तमान युगात संस्कृत भाषेच्या अध्ययन, संशोधन आणि प्रयोगाच्या अमर्याद शक्यता आहेत. संस्कृतच्या महिमेचे वर्णन हिंदीतील महान कवी मैथिलीशरण गुप्त यांच्यासह अनेक विद्वान आणि विचारवंतांनी केले आहे. सद्यःस्थितीत संस्कृतला आधुनिक तंत्रज्ञान तसेच ज्ञान-विज्ञानाशी जोडून तिच्या व्यापक प्रसाराला चालना देण्याची आवश्यकता असल्याचे त्यांनी सांगितले.

कार्यक्रमाची सुरुवात दीपप्रज्वलन आणि सरस्वतीच्या प्रतिमेला पुष्पहार अर्पण करून करण्यात आली. शोधार्थी साहेबुदेव शर्मा यांनी मंगलाचरण सादर केले. साहित्य विद्यापीठाचे अधिष्ठाता प्रो. अवधेश कुमार यांनी स्वागत व विषयाची प्रस्तावना मांडली.

संस्कृत साहित्य विभागाचे सहायक प्राध्यापक डॉ. प्रदीप यांनी आभार मानले. कार्यक्रमाचे संचालन संस्कृत साहित्य विभागाचे प्रभारी तसेच सहायक प्राध्यापक डॉ. जगदीश नारायण तिवारी यांनी केले.

यावेळी डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. वीरेंद्र प्रताप यादव, डॉ. जयंत उपाध्याय, डॉ. शैलेश मरजी कदम, डॉ. श्रीनिकेत मिश्र, डॉ. अखिलेश यादव, डॉ. अभिषेक सिंह, बी.एस. मिरगे यांच्यासह विश्वविद्यालयातील शिक्षक, शोधार्थी व विद्यार्थी मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.